<۸۵

ईमान का तक़ाज़ा क्या है ?

जनाब हज़रत मौलाना अबुल हसन अली
साहब नदवी मद्दज़िल्लहुलआली
की दीनी तालीमी
कॉनसिल बस्ती में की गई तक़रीर पेश ख़िदमत है

छपवाने वाला :-
ज़काउल्लाह ख़ाँ
सदर इस्लाहुल मुस्लेमीन कमेटी खजूरीरुंडा,
तहसील गरोठ, ज़िला- मंदसौर (म. प्र.),
व मोहतमिम मदरसा साबिरा बाबा फ़रीद नगर कॉलोनी,
खजराना, इन्दौर (म. प्र.)

अर्ज़ :- बार बार पढ़कर अमल करने की कोशिश कीजिये ।

www.abulhasanalinadwi.org

अऊज़ुबिल्लाहि मिनशशैतानिर्रजीम ।
बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम
वअनफ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाहि वला तु लक़ू बिएदीकुम इलत्राहलुकह वअहसिनू इन्नल्लाहा युहिब्बुल मुहसिनीन

पारा २ रुकू ८

अल्लाह तआला के रास्ते में ख़र्च करो और अपने आप हिलाकत में न पड़ो और ऐहसान करो अल्लाह तआला ऐहसान करने वालों से मोहब्बत रखता है ।

या अय्युहल्लज़ीना आमनू क़ू अनफ़ुसकुम व अहलीकुमनारा व क़ूदुहन्नासु वल हिजारह अलैहा मलाइ कतुन ग़िलाज़ुन शिदादुल लायासूनल्लाहा मा अमरहुम व यफ़अलूना मायुमरून०

पारा २८ रुकू १६

ऐ ईमान वालों अपने आप को और अपने घर वालों को दोज़ख़ की आग से बचाओ जिसका ईंधन आदमी और पत्थर है । जिस पर सख़्त और मज़बूत फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं । जो अल्लाह तआला की हुक्म में नाफ़रमानी नहीं करते हैं और जो कुछ उनको हुक्म दिया जाता है उसको फ़ौरन बजा लाते हैं ।

हज़रात ! वक़्त ज़्यादा हो गया है लेकिन चूंकि आप हज़रात शौक़ से सुनने के लिये बैठे हैं और जो बात शौक़ की हालत में कही जाती है वह शौक़ के साथ सुनी जाती है , और उसका असर भी होता है, इसलिए मैं लम्बी तक़रीर नहीं करूंगा बल्कि मुख़्तसर तक़रीर करूंगा ताकि आप इस मुख़्तसर तक़रीर को सुन कर उस पर अमल करने की कोशिश करेंगे ।

मैं सबसे पहले एक ग़लतफ़हमी दूर करूंगा । मैंने अभी जो अपके सामने पहली क़ुरआन करीम की आयत पढ़ी है उसमें अल्लाह तआला ख़र्च करने के लिये फ़रमाता है उसका क़िस्सा यह है जो मैं अपको पहले सुना दूँ कि एक मोक़े पर कुछ मुसलमान ऐसे थे जो अपनी जान हथेली पर रख कर और अपने आप को ख़तरे में डाल कर इस्लाम की ख़िदमत कर रहे थे और नतीजे की बिल्कुल परवाह नहीं कर रहे थे उनमें कुछ लोगों को ख़्याल हुआ " **फ़तहा मक्का** " के बाद कि इस्लाम ग़ालिब हो चुका है और अब माल ख़र्च करने की और जिहाद की ज़रूरत नहीं रही इसलिए अब हम लोगों को खेती बाड़ी और व्यापार में लग जाना चाहिये इस मोक़े पर एक बहुत बड़े सहाबी सय्यदना हज़रत अबू अय्यूब

www.abulhasanalinadwi.org

अंसारी रदीअल्लाहो तआला अन्हो जिनके यहाँ पर मदीना शरीफ़ में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सबसे पहले ठहरे थे और यह सहाबी सबसे पहले मेज़बान बने थे उन्होंने कहा कि लोगों इस आयत शरीफ़ का मतलब हमसे पूछो हम अंसारियों के बारे में यह आयत उतरी है और जितना हम उसको समझते हैं उतना दूसरा नहीं समझता है इसलिये कि हम पर गुज़र चुकी है ।

क़िस्सा ये पेश आया कि जब इस्लाम मदीना शरीफ़ में आया और हम अंसार लोगों ने उसके लिये क़ुरबानियाँ देना शुरू कीं तो अपना सारा वक़्त इसी में लगाया अपनी तमाम ताक़त उस पर क़ुरबान कर दी तो ऐसा हुआ कि- हमारे काम धन्धो पर उसका असर होने लगा बाग़ों को पानी देने का टाइम नहीं रहा दुकानों पर बैठने का वक़्त नहीं रहा मकानों के बनाने और काम धन्धों को बढ़ाने का समय नहीं रहा तो हमारा ख़्याल हुआ कि कुछ दिनों तक हमने आँखें बंद करके काम किया अपनों को झोंक दिया लेकिन जब मुसलमानों की संख्या बढ़ी और अल्लाह तआला के फ़ज़्लो करम से हर जगह इस्लाम के सिपाही पैदा हो गये तो हमनें ये सोचा कि अब प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कुछ दिनों के

लिए छुट्टी ले लें और अर्ज़ करें कि अब ज़रा हम अपने कारोबार (धन्धें) की देख- रेख कर लें उसके बाद में फिर हम आगे रहेंगे (हमेशा के लिये छुट्टी नहीं ले रहे हैं) बस ये ख़्याल आया था और अभी ये बात ज़ुबान पर भी नहीं आई थी और आपकी ख़िदमत में (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में) पेश करने कि नौबत भी नहीं आई थी कि क़ुरआन शरीफ़ की आयत (जो मैंने पढ़ी थी) उतरी कि अल्लाह तआला के रास्ते में ख़र्च करो और उस ख़र्च करने का मतलब यह नहीं की सिर्फ़ माल ख़र्च करो बल्कि जानोमाल से लेकर वक़्त और अपनी ताक़त और अपनी हर तरह की कोशिश सब इस्लाम को फैलाने के कामों में ख़र्च कर दो और अपने आप हिलाकत में न पड़ो और अपनों को ख़न्दक में न ढकेलो और अपने गले में फांसी न डालो जब यह आयत उतरी तो उसने हम सब को चौंका दिया यह आयत क्या थी ?

एक कोड़ा और ताज़याना था हम तड़प गये और बेचैन हो गये और मालूम हुआ कि इस्लाम कि ख़िदमत में अपने काम धन्धों से आँखें बंद कर लेना **खुदकुशी नहीं है** बल्कि इस्लाम की ख़िदमत के मुक़ाबले में अपने कारोबार को

www.abulhasanalinadwi.org

अच्छा समझना और दुनियावी काम का ज़्यादा लिहाज़ करना और इसमें जो इस्लाम के तकाज़े हैं उनके पूरे होने में फ़र्क़ आए तो यह ख़ुदकुशी है अपने आप को फाँसी लगाने के बराबर है इस्लाम में फाँसी लगाकर मरना **हराम है** यह मसला सब जानते हैं कि अगर कोई ज़हर खाकर मरना चाहे तो वह कितना ही बीमार क्यों न हो चाहे कितनी ही तकलीफ़ क्यों न हो रही हो इस्लाम में उसको हराम क़रार दिया गया है और उसकी इजाज़त नहीं दी तो जब एक आदमी की ख़ुदकुशी को हराम क़रार दिया है तो फिर पूरी क़ौम और पूरी जमाअत की ख़ुदकुशी को कैसे हराम क़रार नहीं देगा और फिर इस मुस्लिम उम्मत के ज़िम्मे से दूसरों की जानोमाल और ज़िन्दगी का ताल्लुक़ है और **यही आख़री उम्मत है सारी दुनिया के लोगों के लिये सहारा है तो अगर मुसलमान डूबे तो सारी दुनिया डूब जाएगी और अगर यह बची रही (सीधे और सच्चे रास्ते पर चलती रही)** तो दुनिया अगर डूब रही होगी तो इसकी वजह से बच जाएगी और अल्लाह तआला इसी तरह से दुनिया की गाड़ी चलाता रहेगा लेकिन अगर मुसलमानों का बेड़ा डूबा और इस उम्मत ने अपने गले में फाँसी लगाकर ख़ुद अपनी ज़िन्दगी ख़त्म कर ली **(इस्लामी तौर तरीको को छोड़ दिया)** तो यह सिर्फ़ मुसलमानों की ही ख़ुदकुशी नहीं बल्कि तमाम दुनिया के इन्सानों की ख़ुदकुशी है

(क्योंकि यह आख़री उम्मत है और इसी के ज़िम्मे नेकी फैलाना और बुराई से रोकना है)

हिन्दुस्तानी मुसलमानों का इम्तेहान ! तो मेरे दोस्तो और भाइयों कोई इन्सान इसका ख़्याल भी कर सकता है कि एक पूरी की पूरी मिल्लत (क़ौम) जिसने हिन्दुस्तान में इस्लाम का पैग़ाम (सन्देश) पहुचाँया आदमी को आदमी के तरीके से जीना मरना सिखाया जिसने अल्लाह तआला को एक मानना बताया जिसने आदमी को अच्छाई और बुराई की तमीज़ सिखाई वही क़ौम मामूली ख़तरों की वजह से और माली फ़ायदों की वजह से ख़ुदकुशी अपनी ही नहीं पूरी क़ौम की ख़ुदकुशी कबूल कर लेगी ?

सिर्फ़ अपने फ़ायदे का ख़्याल रखना ख़तरनाक है :- आज मुसलमानों का मसला यह है कि वह ख़तरे को समझते हुए भी अपने फ़ायदे के लिये अपने आराम के लिये एशो इशरत के लिये अपनी थोड़ी सी आमदनी के लिये और अपनी प्रेसटिज के लिये मुसलमानों के ईमान की कमज़ोरी यहाँ तक बढ़ गई है कि यह ख़तरा नहीं बरदाश्त कर सकते कि बाप जाकर स्कूल में कह दे कि मेरा बच्चा उर्दू के ज़रीये से तालीम हासिल करना चाहता है, या उर्दू

www.abulhasanalinadwi.org

पढ़ना चाहता है, इसके उर्दू पढ़ने का इंतजाम किया जाए। इसलिये कि वह ख़ुद तैय्यार नहीं है, उसका दिल तैय्यार नहीं है वह सोचता है कि मेरा बच्चा हिन्दी छोड़कर उर्दू पढ़ेगा तो उसका मुस्तक़्बिल (आने वाला ज़माना) रोशन नहीं होगा वह अपने साथियों से जो हिन्दी पढ़ रहे हैं उनसे पीछे रह जायेगा, उसको बड़ी नौकरी नहीं मिलेगी। आप बताईये क्या ईमान के साथ यह बात जमा हो सक्ती है ? (जबकि मुसलमानों को सरकारी नौकरी मिलना दूभर होता जा रहा है) इस्लाम के लिये कभी ख़तरे को गवारा नहीं करना चाहिये - ईमान का शुरू का दर्जा तो यह है कि मुसलमान अपने बच्चे के लिये कभी ख़तरा भी क़ुबूल करने को तैय्यार न हो, यानी **कुफ्र, शिर्क का** (अल्लाह तआला को नहीं मानने का या अल्लाह तआला का साझी या साथी किसी को समझने का) मूर्ति पूजा और एतक़ाद की ख़राबी का ख़तरा। अगर हम ख़तरों से अपने आपको और अपनी औलाद को नहीं बचाते हैं तो सच पूछिये तो हमारा ईमान इतमिनान के क़ाबिल नहीं है, हदीस शरीफ़ में आता है कि जिस आदमी में यह बात होगी उसने गोया की ईमान का बड़ा दर्जा पाया, तो इस ख़्याल से कि वह फिर कुफ्र की तरफ़ (इस्लाम को छोड़कर) चला जाएगा। वह इससे इतना डरे जितना की किसी आदमी को आग में झोंक दिए जाने से डर

मालूम होता है। जैसे कोई बहुत बड़ा अलाव जल रहा हो और कोई उसके लड़के को लेकर उसमें फेंक दे, इससे किसी माँ-बाप को जो तकलीफ़ होगी और उसके रूंगटे खड़े हो जाएगें और माँ-बाप चीख़ने लगेंगे और हो सकता है कि उनका दम निकल जाए **उतना ही रंज और ग़म एक मुसलमान को होना चाहिए कि अपनी औलाद के बारे में इस ख़्याल और इस सोच से कि यह औलाद कभी इस्लाम की दौलत से महरूम हो जाएगी (कभी भी इस्लाम धर्म छोड़कर दूसरा धर्म क़बूल कर लेगी और इस्लाम को त्याग देगी) और यह ईमान का कम से कम दर्जा है।**

याद रखिये हम कितनी ही नमाज़ें पढ़ते हों, चाहे हम कैसी ही मस्जिदें बनाते हों और चाहे हम कितना ही सदक़ा व ख़ैरात करते हों और बल्कि मैं आगे बढ़कर यहाँ तक कहता हूं कि चाहे हम दस-दस हज कर चुके हों, साफ़-साफ़ सुन लिजिये अगर हमने हज पर हज किये और अगर हमने कोई अरबी का बड़ा स्कूल भी क़ायम कर दिया है और हम बड़े-बड़े आलिमों के और बुज़ुर्गों के बड़े मोतक़िद भी हों लेकिन इसके साथ हम इस बात को मानते और क़ुबूल करते हैं और औलाद को उस रास्ते पर चलने की छूट देते रहते हैं और इसकी बिल्कुल फ़िक्र नहीं करते हैं **कि वह आगे चलकर**

www.abulhasanalinadwi.org

इस्लाम को त्याग देगा इसमें कोई हर्ज नहीं समझते हैं तो मैं आप से साफ़-साफ़ कहता हूँ कि यह हज और यह सब नेक काम क़यामत के दिन काम नहीं आएगें और आपको बख़्शवा नहीं सकेगें।

बदन की मौत से रूह की मौत ख़तरनाक है :-

आप फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ें आप पांचों वक़्त की नमाज़ें पढ़ें और सुन्नतें अदा करें और अगर आप पर हज फ़र्ज़ है तो आप एक मर्तबा हज कर लें और अगर ज़कात फ़र्ज़ है तो आप ज़कात दे दें उसके बाद आपसे कोई निफ़्ली काम नहीं होता हो आप कोई तसबीह नहीं पढ़ते हों (तो मैं साफ़-साफ़ कहता हूँ) लेकिन आपके दिल में यह बात बैठी हुई हो कि सब कुछ मंज़ूर है यहाँ तक कि ईमान की ख़ातिर औलाद की मौत भी मंज़ूर है (बहुत मुश्किल से यह सख़्त अल्फ़ाज कह रहा हूँ) लेकिन मुझे जो दीन (इस्लाम) की बातें मालूम हैं **वह मुझसे कहलवा रही हैं** वह थोड़ी सी अमानत जो मेरे सीने में है वह बुलवा रही है तो मैं कहता हूँ कि इस्लाम की निशानी यह है कि आदमी अपनी औलाद की मौत को, उसकी बदन की मौत को उसकी रूहानी मौत पर तरजीह दे वह कहे कि चार मर्तबा और दस मर्तबा इस औलाद पर बदन की मौत आ जाए मगर **एक मर्तबा भी इसको ईमान की मौत नहीं आए** (इससे ईमान नहीं चला जाए)

जिसकी वजह से वह हमेशा-हमेशा के लिये दोज़ख़ में जलता और फूंकता रहेगा और उस पर अज़ाब होता रहेगा। क़यामत में हिसाब-किताब के बाद बड़ें सख़्त लफ़्ज़ हैं बड़ी मुश्किल से मेरी ज़बान से निकले हैं। मैं आपसे माफ़ी चाहता हूँ बच्चों वाली माँओं से माफ़ी चाहता हूँ और साहबे औलाद वालदैन से भी माफ़ी चाहता हूँ मगर ईमान का तक़ाज़ा यह है कि आदमी **यह दुआ करे कि - ऐ अल्लाह ! अगर ईमान सलामत रहना है, अगर इस औलाद को इस्लाम के रास्ते पर चलना है, अगर इसको कल क़यामत के दिन अल्लाह के रसूल (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सामने मुसलमान बनकर खड़ा होना है और उनकी शफ़ाअत का हक़दार होना है तो इसको दुनिया में जिन्दा रख वरना इसको दुनिया से उठाले ' यह है ईमान का तक़ाज़ा।'**

हमारी ईमानी हालत क्या है ? मगर हम किस हालत में हैं, इतना सा ख़तरा हम बर्दाश्त नहीं कर सकते कि हमारे लड़कों को दो हज़ार तनख़्वाह के बजाए डेढ़ हज़ार तनख़्वाह मिले। उर्दू से हम बेज़ार हैं (दुखी हैं) उर्दू से हमारा कोई ताल्लुक़ नहीं। इस्लाम की बातों से हमारा कोई ताल्लुक़ नहीं। बुनियादी अक़ीदों की हमें कोई मालूमात नहीं (अल्लाह तआला की वहदानियत (एक मानना) और रसूल की रिसालत (हज़रत

www.abulhasanalinadwi.org

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बारे में और क़यामत वग़ैरह के बारे में पूरी-पूरी सही मालूमात नहीं हैं (हमें इन बातों से कोई ख़ास लगाव नहीं है) बस हमारी औलाद लिख पढ़ कर किसी ओहदे पर पहुंच जाए। हालांकि इसके बाद जो हालात होते हैं वह हमें मालूम है कि ऐसी औलाद माँ-बाप की कितनी ख़िदमत करती है और उसने माँ-बाप की ख़िदमत करने का कितना सबक़ सीखा था। आपने उसके दीन (इस्लाम) को दांव पर लगाया कि हमारे काम आए, मगर अफ़सोस है कि वह आपको ठोकर मारता है और लात मारता है, नाफ़रमानी करता है और आपके दिल को दुख और रंज पहुंचाता रहता है। **(दीनी तालीम नहीं होने की वजह से)।**

' न ख़ुदा ही मिला न विसाले सनम,
न इधर के रहे न उधर के रहे। '

याद रखिये ! अगर आपने अपनी औलाद **की दुनिया को उसके दीन पर तरजीह दी** (दुनिया को दीन से अच्छा समझा) तो अल्लाह तआला आपको आपकी ज़िन्दगी में ही दिखायेगा कि आप तरसेंगे उसके एक-एक पैसे को, आप तरसेंगे उसकी रोटी के टुकड़े को, आप तरसेंगे उसके एक सलाम को की आप को आकर सलाम करे, यह अल्लाह तआला की तरफ़ से फ़ौरी और पहली सज़ा है जो दुनिया में

मिलती है और जो सज़ा मरने के बाद मिलेगी, क़ुरआन शरीफ़ में उसकी तफ़सील बयान कर दी है कि वह औलाद यह कहेगी **"रब्बना इन्ना अताना सादतना व कुबरा अना फ़अदल्लू नस्सबीला रब्बना व आतिहिमदिअफ़ैनि मिनल अज़ाबि व लअन हुम लाअनन कबीरा ०**
सूरह : अहज़ाब (पारा २२)

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि क़यामत के दिन एक नसल की नसल खड़ी होगी औलाद की, वह कह रहे होंगे कि ए हमारे पालने वाले अल्लाह तआला ! हमने अपने बड़ों की बात मानी (इन्होंने हमें जिस रास्ते पर हमको लगाया हम लग गये) तो इन्होंने हमें कहीं का नहीं रखा हम दीन (मज़हब) से दूर हो गये, ए अल्लाह इनको दुगना अज़ाब दे और अच्छी तरह से उन पर लानत बरसा।

साफ़-साफ़ आपको बता रहा हूँ कि ईमान का तक़ाज़ा यह है कि, औलाद की फ़ाक़ा कशी, औलाद का कुछ न होना, औलाद की जेब का बिल्कुल ख़ाली होना, उसका इज़्ज़त और दौलत से दूर रहना, दिल से क़बूल हो, बल्कि शुक्र के साथ क़बूल हो और **यह हरगिज गवारह (क़बूल) न हो कि वह ईमान की दौलत से महरूम हो जाये** (ईमान की दौलत उसके हाथ से

www.abulhasanalinadwi.org

निकल जाये) और वह इस्लाम को छोड़कर दूसरे मज़हब को इख़्तियार कर ले । देवमाला के चक्कर में फंस जाए । साफ़-साफ़ मूर्ति पूजा और कई खुदा को मानने लग जाए ।

अगर यह आपके ईमान का तक़ाज़ा नहीं है तो अपने ईमान की खैर मनाइये और पूछिये आलिमों से कि ईमान रहा या नहीं ?

सहाबा किराम रदीअल्लाह तआला अन्हो के ईमान की एक अच्छी मिसाल :-

मैं माँओं और बहनों से कहता हूँ कि हज़रत **ख़नसाअ रदीअल्लाह तआला अन्हा** ने जिनके कई बेटे थे सब को बुलाकर कहा 'लड़ाई और जंग हो रही है' मसला नौकरीयों का नहीं है, मसला खाने-पीने का नहीं है , मसला जान का है, जिनके लिए माँए रातों की नींदें हराम करती हैं और लिये-लिये फिरती हैं और खाना-पीना भूल जाती हैं । (अगर बच्चा बिमार हो जाता है तो) इस अल्लाह की बन्दी और मोमिना ने अपने जवान लड़कों को बुलाया और कहा कि देखो मैंने तुम को पाला था इस दिन के लिये अब वक्त आ गया है कि तुम **इस्लाम पर जान दो अल्लाह का नाम लो** और मैदाने जंग में जाओ । उसके बाद इन लड़कों को बिदा किया, गोया कफ़न पहना कर रूख़सत किया, उसके बाद ख़बर आती है एक-एक की शहादत की

(लड़ाई में मारे जाने की) जब सबसे आख़री लड़के की शहादत की ख़बर आई तो कहा - 'अलहम्दुलिल्लाहिल्लज़ी अकरमनी बिशहा दातिहिम, मैं उस ख़ुदा की शुक्रगुज़ार हूँ जिसने मेरा मर्तबा, दरजा बढ़ाया उनकी शहादत से (लड़ाई में मरने से) ।

अपने दिल पर हाथ रख कर देखिये किसमें है यह हिम्मत आज इसका मौका नहीं । आज यह नहीं कहा जा रहा है कि बच्चों को लड़ाई में भेजिये, लेकिन सिर्फ़ यह कहा जा रहा है कि बच्चों के ईमान के लिये कुछ कुरबानी दीजिये । कुछ ज़रा सा ईमान को ज़ाहिर कीजिये कुछ ईमान का सबूत दीजिये अगरचे माशी खतरा हो या इज़्ज़त का ख़तरा हो तब भी ईमान को बचाने की फ़िक्र कीजिये । मसला यह है कि अपने बच्चों के ईमान को बचाने के लिये आप कहाँ तक कोशिश करते हैं ? हमारी माँए-बहनें जो परदे के पीछे बैठी हुई हैं और जो भाई सामने बैठें हैं वह फ़ैसला करें और यह बात अपने दिल में लेकर जाए यहाँ से कि ईमान की क़द्र करेंगे ईमान की क़ीमत पहचानेंगे ईमान का शुरू का तक़ाज़ा पूरा करें वह **यह है कि हर क़ीमत पर अपनी औलाद के ईमान को बचाना है और अपनी नसल को मुसलमान रखना है,** इसके लिये जो बड़े से बड़ा मुतालबा हो उसे हर हाल में पूरा करना है । **सही दीनी तालीम सबसे पहले दिलवाऐंगे ।** सुन्नते याक़ूबी को ज़िन्दा करने की ज़रूरत

www.abulhasanalinadwi.org

है एक बात जो असल लुब्बे लुबाब और निचोड़ है सारी बातों का वह यह है कि **हर हाल में अपनी आइन्दा नसल जो कि औलाद की शकल में अल्लाह तआला ने आपको नैमत अता फ़रमाई है ।** अल्लाह तआला की इस नैमत का शुक्र यह है कि **उनको इस्लाम पर क़ायम रखने की पूरी पूरी कोशिश करें, दुआ करें, हर तरह की कोशिश करें,** अगर क़ुरबानी देने का मौक़ा आए तो क़ुरबानी दें और कम से कम अपने इरादों से अपनी मर्ज़ी से उन्हें इस्लाम की बातों से दूर नहीं होने दें इस वक़्त हमारे करने का काम यह है कि जो कुछ भी हम से हो सकेगा हम उस पर अपनी पूरी ताक़त लगा देंगे कि हमारे जीते जी यह ख़तरा न हो कि **वह इस्लाम से दूर होते चले जाएँ और हम देखते रहें (उनकी मज़हबी तालीम का कोई इन्तज़ाम न करें)** हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम ने अपने मरने से पहले अपने बच्चों, पोतों और नवासों को इकट्ठा किया और कहा," ऐ मेरे बेटो ! यह बताओ की तुम मेरे मरने के बाद किसकी इबादत करोगे ?"

☆☆☆" **अम कुनतुम शोहदाआ इज़ हदर याक़ूबल मौत, इज़ कालालि बनीहि मा ताबुदूना मिम बादी । कालू नांबुदो इलाहका व इलाहा आबाइका, इब्राहीमा वं इस्माईला व इस्हाक़ा, इलाहंव वाहिदंव व नहनु लहू मुसलिमून ०**

पारा १ रू. १६ सुरह बक़रह

☆☆☆ क्या तुम ख़ुद उस वक़्त मौजूद थे जिस वक़्त याक़ूब अलेहिस्सलाम का आख़िरी वक़्त आया और जिस वक़्त उन्होंने अपने बेटों से पूछा कि तुम लोग मेरे मरने के बाद किस की इबादत करोगे ? उन्होंने (सबने) जवाब दिया कि हम उसकी इबादत करेंगे जिसकी आप और आपके बुज़ुर्ग हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम, हज़रत इस्माईल अलेहिस्सलाम, हज़रत इस्हाक़ अलेहिस्सलाम इबादत करते थे यानी वही अल्लाह तआला जो एक अकेला है और उसका कोई साथी नहीं है (हम भी इसी की इबादत करेंगे) और इसी पर हमेशा क़ायम रहेंगे ।

" देखो मेरे बेटो, मेरे पोतों, मेरे नवासों ! मेरी पीठ क़ब्र से नहीं लगेगी, ज़मीन से नहीं लगेगी, जब तक मुझे यह तसल्ली और इतमिनान नहीं हो जायेगा कि मेरे बाद तुम किस रास्ते और तरीक़े पर चलोगे और किस की इबादत करोगे ? **मा ताबुदूना मिमबादी ?**

वह नबी की औलाद थी, उन्होंने कहा कि - अब्बाजान, दादाजान, नानाजान, आप क्यों घबरा रहे हैं ? आपने जो सबक़ हमें पढ़ाया है उसको हम कभी भी नहीं भूलेंगे , हम आपके और आपके बाप और आपके चचा और आपके दादा, जनाब हज़रत

www.abulhasanalinadwi.org

इस्हाक़ अलैहिस्सलाम, हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बताए हुए रास्ते पर ही चलेंगे और **एक अल्लाह तआला की ही इबादत करेंगे,** तब जाकर हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम को तसल्ली और इतमिनान हुवा। उन्होंने यह नहीं कहा था कि देखो बेटों, फ़लाँ जगह मैंने पैसे गाड़ दिये थे, तुम निकाल लेना, फ़लाँ पर मेरा इतना क़र्ज़ा है उससे वसूल कर लेना, फ़लाँ खेत और ज़मीन और मकान छोड़ कर जा रहा हूँ यह सब तुम बाँट लेना और यह भी नहीं कहा कि तुम मुहब्बत और इत्तफ़ाक़ से रहना, जैसे बहुत से शफ़ीक़ बाप कहते हैं। यह सब कुछ नहीं कहा सिर्फ़ एक बात कही कि **" मा ताबुदूना मिम बादी ? " मेरे बाद तुम किस की इबादत करोगे ? यह नबी का तरीक़ा है और यही हमें क़ुरआन शरीफ़ में तालीम दी गई है।** अल्लाह तआला हमें ईमान की क़द्र नसीब फ़रमाए और उन ख़तरों का एहसास (समझ) जो इसके नहीं होने से (ईमान का एहसास नहीं होने से) अल्लाह तआला ने और उसके सच्चे रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बयान किये हैं और क़ुरआन शरीफ़ में साफ़-साफ़ कह दिया है -(यह आयत शुरू में लिखी हैं)

या अय्युहाललज़ीना आमनू क़ूअन फ़ुसकुम व अहलीकुम नारा व क़ूदु हन्नासु वल हिजारा अलैहा मलाइकतुन ग़िलाज़ुन शिदादुन ला याअसूनल्ला ह मा-अमर-हुम-व-यफ़अलूना-मा-युमरून ०

ऐ ईमान वालों तुम अपने को और अपने घर वालों को दोज़ख़ की आग से बचाओ जिसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं जिस पर सख़्त और मज़बूत फ़रीश्ते मुक़र्रर हैं जो अल्लाह तआला की ज़रा भी नाफ़रमानी नहीं कर सकते और जो कुछ उनको हुक्म दिया जाता है उसको फ़ौरन बजा लाते हैं।

(पारा २८ रू. १६)

ऐ ईमान वालों बचाओ अपनी जान को भी और अपने घर वालों को भी दोज़ख़ की आग से जिसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं।

अल्लाह तआला हमें और आपको तौफ़ीक़ दे कि ईमान की जो दौलत और नेमत महज़ अपने फ़ज़्लों करम और बन्दा नवाज़ी से अपने प्यारे नबी, वली अल्लाह और मक़बूल बन्दों के ज़रिये से बग़ैर मेहनत के हमको नसीब फ़रमा दी है। हम इस ईमान की दौलत को क़ायम रखें और अपनी ज़िन्दगी में भी और अपनी औलाद के लिये भी उसको महफ़ूज़ कर जाऐं **(उनको समझदारी के साथ सही मज़हबी तालीम दिलाकर)**

ऐ अल्लाह हमारे ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमा और हमें जब तक ज़िन्दा रख इस्लाम के सीधे रास्ते पर ज़िन्दा रख और जब दुनिया से उठा तो ईमान के साथ-उठा और हमारी औलाद को भी ऐ अल्लाह ईमान से जोड़े रख और इस्लाम के सीधे रास्ते

www.abulhasanalinadwi.org

पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा जो तेरे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताया और ईमान पर उनको (औलाद) को भी क़ायम रख और ईमान के साथ उनको भी उठा और ईमान के साथ हम सबका ख़ातमा फ़रमा ।
आमीन

रब्बना तक़ब्बल मिन्ना इन्नका अन्तस समीउल अलीम व तुब अलैना इन्नका अन्तत तव्वाबुर रहीम ० आमीन

मज़हबी तालीम हासिल करना हर मुसलमान मर्द, औरत पर फ़र्ज़ है ।

सिर्फ़ पढ़ कर रखने के लिये नहीं बलकि बार-बार पढ़ कर अमल करने के लिए ख़िदमत में पेश है ।

औलाद को सही मज़हबी तालीम दिलाना सब से ज़यादा ज़रुरी समझये (समझदारी के साथ) ।

---

www.abulhasanalinadwi.org